दृष्टि
The Vision

इतिहास
(वैकल्पिक विषय)
टेस्ट-1

DTVF / OPT-23 **H-2301**

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

Name: Ravi Gangwar

Mobile Number:

Medium (English/Hindi): Hindi

Reg. Number:

Center & Date: Mukherjee Nagar, 18.07.23

UPSC Roll No. *(If allotted)*: 0806397

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS and printed both in HINDI & ENGLISH.
Candidate has to attempt FIVE questions in all.
Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE from each section.
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1						13	5	5.5	4.5	5	5	6	26
2	12	8	8			28	6						
3							7	12	8	8.5			28.5
4							8	11	6	7			24
						सकल योग (Grand Total)	119.5						

e-11157

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

संदर्भ दक्षता ठीक है

- उत्तर के आयाम को पूर्णता से प्रस्तुत करें
- भाषा में सुधार लाएं।
- निरंतर अभ्यास करें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क / SECTION - A

1. आपको दिये गए मानचित्र (पृष्ठ सं. 5) पर अंकित निम्नलिखित स्थानों की पहचान कीजिये एवं अपनी प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में उनमें से प्रत्येक पर लगभग 30 शब्दों की संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये। मानचित्र पर अंकित प्रत्येक स्थान के लिये स्थान-निर्धारण संकेत क्रमानुसार दिये गए हैं: $2\frac{1}{2} \times 20 = 50$

Identify the following places marked on the map (Page no. 5) supplied to you and write a short note of about 30 words on each of them in your question-cum-answer booklet. Locational hints for the each of the places marked on the map are given below seriatim. $2\frac{1}{2} \times 20 = 50$

(i) एक ऐतिहासिक राजधानी
An ancient Capital

'लुम्बिनी" वर्तमान अवस्थिति को भी बताएं।

यह कपिलवस्तु की राजधानी थी जहाँ महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ था तथा यहाँ के राजा शुद्धोधन थे तथा वर्तमान में यह नेपाल में अवस्थित है। 1.5

(ii) एक मध्यपाषाण स्थल
A Mesolithic Site

सराय नाहर राय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(iii) एक महापाषाण स्थल
A Megalithic Site

पिकलीहल

आदिचनल्लूर

(iv) एक शिलालेख स्थल
An inscriptional site

जूनागढ़ गुजरात (सौराष्ट्र)

रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख जो कि संस्कृत भाषा में लिखित पहला शिलालेख स्थल है इसमें सुदर्शन झील तथा उससे संबंधित चन्द्रगुप्त मौर्य तथा अशोक का वर्णन मिलता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(v) एक शैक्षणिक केंद्र
An educational center

तक्षशिला

यह प्राचीन समय में विभिन्न आश्रमों विद्यालयों का केन्द्र था। यहाँ सैनिक शिक्षा, व्याकरण, चिकित्सा सम्बन्धी ज्ञान दिया जाता था। चाणक्य, चन्द्रगुप्त मौर्य यहीं से संबंधित हैं। रेशम मार्ग के पतन के साथ ही इसकी महत्व में गिरावट आयी।

2.5

(vi) एक प्राचीन बंदरगाह
An ancient port

ताम्रलिप्ति

कोलकाता

यह एक प्राचीन बंदरगाह था। जहाँ से रेशम, मसालें, हाथीदाँत के सामान आदि का निर्यात होता था। यह व्यापारिक सम्बन्ध चीन, दक्षिण-पूर्व एशिया से जुड़े हुए थे।

2

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(vii) बौद्ध अवशेषों के लिये प्रसिद्ध स्थान
A site known for Buddhist remains

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संघोल

(viii) जुता हुआ खेत
A ploughed field

कालीबंगा (राजस्थान)

हड़प्पा सभ्यता के वह जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं तथा यहाँ से अलंकृत ईंटों से घर निर्माण तथा कच्ची ईंटों से घर निर्माण के भी साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

2.5

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ix) पूर्व हड़प्पाकालीन स्थल
Pre-Harappan site

राणाघुंडई

श्रामती

(x) एक हड़प्पाकालीन स्थल
A Harappan site

चांहुदड़ो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(xi) एक नवपाषाणिक स्थल
A Neolithic site

चिरांद

(xii) एक चित्रित धूसर मृदभांड स्थल
A painted-Grey-ware site

सिनौली

हस्तिनापुर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(xiii) एक हड़प्पाकालीन स्थल धौलावीरा
A Harappan site

→ शहर को तीन भागों में विभाजित किया था
→ जल निकास प्रणाली अति उन्नत किस्म की थी।

1

(xiv) एक शैक्षणिक केंद्र नालन्दा
An educational center

इसकी स्थापना गुप्त सम्राट कुमारगुप्त ने की थी। महायान बौद्ध शिक्षा हेतु प्रमुख स्थल। ह्वेनसांग के समय यहाँ का आचार्य शीलभद्र था।

J.S

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(xv) एक गुफा स्थल
A cave site

उदयगिरी खण्डगिरी

इन पहाड़ियों पर गुफाओं का निर्माण मौर्य काल में आजीवक संप्रदाय के अनुयायियों के लिए कराया गया था। जिनमें दशरथ, कर्णचौपर, सुदामा, लोमस ऋषि गुफा प्रमुख है।

(xvi) अशोक के शिलालेख का स्थान
Site of Ashokan edict

गुदगोलम

यह कर्नाटक में मौर्य साम्राज्य का दक्षिणतम शिलालेख स्थल है जिसमें मौर्य शासक अशोक का नाम भी उल्लिखित है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xix) एक बंदरगाह नगर
A Port city

~~कावेरी पट्टनम~~ मामल्लपुरम

(xx) एक उत्तरी हड़प्पाकालीन स्थल
A Late-Harappan Site

~~गांधार~~ रूपनगर

~~यह महाजनपद कालीन प्रमुख जनपद था जिसकी अवस्थिति पश्चिमोत्तर भारत में थी।~~

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xvii) एक लुप्त बंदरगाह
A lost Port

"पुहार"

प्राचीन समय में यह बंदरगाह "चोल साम्राज्य" (संगम काल) में एक महत्वपूर्ण व्यापारिक भूमिका निभाता था किन्तु समय के साथ इसका महत्व कम होता चला गया।

2

(xviii) टेराकोटा कला की गुफा
A Terracotta art Cave

चंद्रकेतुगढ़

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (a) पुरातात्त्विक स्रोत साहित्यिक स्रोतों को स्थापित करने में मदद करते हैं। विश्लेषण कीजिये। 20

Archaeological sources help establish literary sources. Analyse. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इतिहास लेखन परम्परा में साहित्यिक स्रोतों के साथ ही पुरातात्विक स्रोतों का महत्वपूर्ण योगदान है। वस्तुतः पुरातात्विक स्रोत साहित्यिक स्रोतों के सन्दर्भ में सत्यापक का कार्य करते हैं।

भारतीय इतिहास में साहित्यिक स्रोत जैसे विभिन्न वेद, उपनिषद, अर्थशास्त्र, ईंडिका, राजतरंगिणी, आइन-ए-अकबरी आदि की उपलब्धता दिखायी पड़ती है, जिनसे तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्थिति का वर्णन मिलता है, किन्तु साहित्यिक स्रोतों का लेखक पूर्वाग्रह, अज्ञान आदि से ग्रसित भी हो सकता फलतः इस सीमा को सुधारने में पुरातात्विक स्रोतों का योगदान महत्वपूर्ण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हो जाता है। इसे निम्न उदाहरणों से समझा जा सकता है:

i) साहित्यिक स्रोत इंडिका भारत में दास प्रथा के अभाव तथा अकालों की अनुपस्थिति बताती है जबकि मौर्यकालीन अभिलेखों में अकाल के दौरान राहत कार्यों के वर्णन की बात की गयी है।

ii) हड़प्पा सभ्यता का व्यापार-वाणिज्य उन्नत था इसकी पुष्टि सारगोन के अभिलेख में उल्लिखित इस तथ्य से होती है कि "मेलुहा के व्यापारी यहाँ जहाज से आते थे।"

iii) इसी प्रकार साहित्यिक स्रोत गुप्तकाल को स्वर्णकाल घोषित करते हैं तो पुरातात्विक स्रोतों के तहत उपलब्ध अत्यधिक स्वर्ण सिक्के, स्कन्दगुप्त के भीतरी अभिलेख में वर्णित विजय इतिहास, नालन्दा की उपस्थिति आदि इस तथ्य को प्रमाणित भी करते हैं।

iv) इसी क्रम में जब साहित्यिक स्रोत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जानकारी पूरी तरह नहीं दे पाते हैं तो पुरातात्विक स्रोत इनकी इस कमी को भी पूरा करते हैं। जैसे कि हर्ष & चालुक्य नरेश पुलिकेशन द्वितीय के युद्ध का नतीजा ह्वेनसांग ने अपनी पुस्तक में नहीं दिया है किंतु ऐहोल अभिलेख में वर्णित है कि हर्ष नर्मदा के दक्षिण में अपना विस्तार नहीं कर पाया था।

v) साहित्यिक स्रोत इतिहास के सन्दर्भ में एक आयामी दृष्टिकोण (लेखक का) के प्रतिनिधि परिचायक होते हैं किन्तु पुरातात्विक स्रोत इतिहास के बहुआयामी (प्रेक्षक) दृष्टिकोणों से सम्बन्धित होते हैं।

इस प्रकार यह कहना उचित होगा कि पुरातात्विक स्रोत साहित्यिक स्रोतों के सन्दर्भ में पूरक का कार्य करते हैं।

12/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) महापाषाणकालीन संस्कृति भारत के आदिवासी समाजों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। चर्चा कीजिये। 15

Megalithic Culture can be seen vividly in the tribal societies of India. Discuss. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महापाषाणकालीन संस्कृति की उपस्थिति भारतीय इतिहास में दक्षिण भारत के क्रम में लगभग 1600 BCE के आस पास पायी जाती है।

महापाषाणकालीन संस्कृति को महापाषाण इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह विभिन्न समाधि स्थलों को ढकने हेतु पत्थर के बड़े-2 टुकड़ों का प्रयोग करते थे। यह कई प्रकार की होती थी। जैसे कि - सिस्ट समाधि, सर्कल समाधि आदि।

महापाषाणकालीन संस्कृति के कुछ तत्वों की निरंतरता आज के आदिवासी समाज में स्पष्टता के साथ देखी जा सकती है। जिसे निम्न बिंदुओं के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तहत समझा जा सकता है।

i) महापाषाण के दौरान शवाधान की दफनाने की प्रवृत्ति तथा उसमें व्यक्ति के दैनिक प्रयोग की वस्तुएँ रखने की प्रवृत्ति आज की कई आदिवासी समुदायों में प्रचलित है।

ii) इसी प्रकार महापाषाणकालीन संस्कृति में त्रिशूल आदि की उपस्थिति भगवान शिव की पूजा को संबोधित करती है जो कि विभिन्न आदिवासियों समुदायों के साथ-साथ भारत के अन्य समुदायों में अभी तक विद्यमान है।

iii) महापाषाणकाल के दौरान समाज में मातृसत्तात्मक संस्कृति उपस्थित थी जिसके साक्ष्य उत्तर-पूर्व में कई जनजातियों में आज भी विद्यमान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

iv) इसी प्रकार महापाषाणकालीन संस्कृति में व्याप्त प्रकृति पूजा जैसी अवधारणा आज भी भारत के कई जनजातीय समाजों में प्रचलित है तथा सार्वभौमिक उपभोक्तावादी युग में प्रकृति संरक्षण हेतु इस प्रथा की वैश्विक रूप से जरूरत महसूस की जा रही है।

v) समाज में वर्ण विभाजन नहीं था और मुख्यतया जनजातियों में भी यह वर्ण विभाजन नहीं व्याप्त हुआ है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि महापाषाणकालीन कुछ महत्वपूर्ण सांस्कृतिक विशेषताएँ अपनी उपयोगिता के चलते आज भी प्रासंगिक है।

8/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) सिक्कों और शिलालेखों पर विचार किये बिना प्रारंभिक भारतीय इतिहास का अध्ययन अधूरा रहेगा। परीक्षण कीजिये। 15

The study of early Indian history will be incomplete without considering coins and inscriptions. Examine. 15

भारतीय इतिहास लेखन की परम्परा में शिलालेखों तथा सिक्कों का अतुलनीय योगदान है। वस्तुत: सम्पूर्ण मौर्य काल की खोज ही अशोक कालीन शिलालेखों को पढ़े जाने के बाद हुयी।

भूमिका में अभिलेख का तात्पर्य संक्षेप में लिखें

सिक्कों & शिलालेखों का प्रारंभिक भारतीय इतिहास के अध्ययन में निम्नलिखित योगदान है:-

i) सिक्कों की उपलब्धता से उस काल की आर्थिक, व्यापारिक, सांस्कृतिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।

ii) रोमन सिक्कों का भारत में पाया जाना, उच्च व्यापारिक स्थिति को दर्शाता है तो सिक्कों में प्रयुक्त धातु का प्रकार (सोना, चाँदी, ताँबा आदि)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

राज्य की आर्थिक स्थिति का द्योतक है। जैसे कि गुप्तकाल की शुरुआत में स्वर्ण सिक्को की अधिक संख्या समृद्धता का तो उत्तर गुप्त काल में कौड़ियों द्वारा विनिमय होने से आर्थिक स्थिति मे ह्रास का सूचक है।

(ii) इसी तरह सिक्कों पर विभिन्न राजाओं का नाम अंकित होना, देवी - देवताओं की आकृति का अंकित होना, तत्कालीन राजनीतिक - धार्मिक स्थिति का वर्णन करती है। जैसे कि समुद्रगुप्त के सिक्को पर ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ वीणा के साथ उसकी चित्र उसके संगीत प्रेम को वर्णित करती है।

(iv) इसी क्रम में अभिलेखो की बात करें तो अभिलेखों के जरिये स्थापत्य कला, विज्ञान - तकनीक, सिंचाई व्यवस्था, युद्धों का वर्णन आदि उल्लेख मिलते है।

संदर्भ प्रासंगिक है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

v) रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख तत्कालीन समाज में संस्कृत के प्रचलन को दर्शाता है तथा। अभिलेख में सुदर्शन झील तथा उससे संबंधित राजाओं का वर्णन राज्य द्वारा सिंचाई व्यवस्था के प्रबंध को भी इंगित करता है।

vi) मौर्य कालीन इतिहास का निर्माण अभिलेखों व शिलालेखों द्वारा किया जाता है जैसे कि धम्म की अवधारणा, कलिंग विजय, मौर्यकालीन भू-राजस्व व्यवस्था (रुम्मिनदेई अभिलेख), अशोक का राजत्व सिद्धांत (पिता-पुत्र संबंध) आदि का वर्णन मिलता है।

vii) सती प्रथा का अभिलेखीय प्रमाण (एरण अभिलेख), चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त की विजयों का अभिलेख (स्कन्दगुप्त की भीतरी स्तम्भ लेख) खरोष्ठी, ब्राह्मी लिपियों का प्रचलन तथा प्राकृत भाषा के प्रयोग की जानकारी भी अभिलेखों से मिलती है।

good

8/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस प्रकार सिक्के व अभिलेख भारतीय इतिहास लेखन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख / SECTION - B

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: 10 × 5 = 50
Answer the following in about 150 words each:

(a) आहत सिक्कों के बारे में संक्षेप में चर्चा कीजिये।

Discuss in brief about punch-marked coins.

आहत सिक्के भारतीय ऐतिहासिक क्रम में महाजनपदकाल से लेकर पूर्व मौर्य काल तक पाये जाते हैं। जिन्हें उन पर बनाये गये निशानों की वजह से 'आहत सिक्का' कहा जाता है।

अच्छी व्याख्या

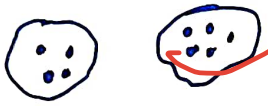

आहत सिक्के विभिन्न प्रकार के होते थे जैसे - पंचमार्क वाले, डाई मार्क वाले इत्यादि। इन सिक्कों की ढलाई करना तत्कालीन समाज में काफी आसान था। इसलिए ही वस्तु विनिमय व्यवस्था के आरम्भिक प्रतिस्थापक के रूप में इन सिक्कों का प्रचलन सम्भव हो पाया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वस्तुतः आहत सिक्कों का प्रचलन मौर्य कालीन केन्द्रीय राज्य व्यवस्था के तहत ढाले गये सिक्कों जैसे - निष्क (स्वर्ण), शतमान (चाँदी) के बाद से कम हो गया। क्योंकि इन सिक्कों का कोई राजनैतिक, सांस्कृतिक महत्व नहीं था। न ही इन पर किसी प्रकार की जानकारी अंकित होती थी और न ही यह किसी तरह के कालक्रम निर्धारण में मददगार थे। इनका निहित मूल्य इनको बनाने में प्रयुक्त धातु जितना ही अधिक होता था।

इस प्रकार आहत सिक्कों की उपस्थिति प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में सिक्कों के विकास क्रम की एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया के शुरुआती चरण को निर्धारित करने में मदद करते हैं।

5.5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) वैदिक धर्म पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।
Write a short note on Vedic religion.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वैदिक धर्म को मुख्यतया: दो भागों प्रथम ऋग्वैदिक कालीन (1500 B.C.-1000 B.C.) तथा दूसरा उत्तर वैदिक कालीन (1000 B.C. - 600 B.C.) में विभाजित किया जाता है।

सिन्धु सभ्यता के पतन के पश्चात वैदिक संस्कृति का उत्थान हुआ जो एक पशुपालन युक्त ग्रामीण संस्कृति थी। वस्तुतः वैदिक धर्म के अन्तर्गत "इन्द्र" को अत्यधिक सम्मान दिया गया जिसे 'पुरन्दर' कहा जाता था, तथा इसी क्रम में अग्नि, वरुण (ऋत का देवता) आदि की पूजा भी होती थी।

वैदिक धर्म बहुदेववादी तथा प्रकृति पूजक था। इसी क्रम में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यज्ञ संबंधी कर्मकाण्डों का महत्व बढ़ा तो पुरोहित, मंत्रोच्चारण, बलि प्रथा को महत्व मिला। वैदिक कालीन युग में अलौकिक सत्ता की पूजा अलौकिक सुखों के लिए होने लगी थी, तथा धर्म सम्बन्धी अधिकारों पर ब्राह्मण वर्ण का वर्चस्व स्थापित हुआ।

इसी प्रकार विभिन्न प्रकार के राजसूय, वाजपेय, आदि यज्ञों की शुरुआत हुयी, जिनके जरिये राजा की सत्ता को धर्म के द्वारा समर्थन तथा शक्ति प्रदान की गयी।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि वैदिक धर्म, सिन्धु सभ्यता के कुछ तत्वों की निरन्तरता तो कुछ तत्वों के नयेपन के साथ उपस्थित था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) हड़प्पा काल के दौरान कृषि और व्यापार प्रथाओं पर चर्चा कीजिये।

Discuss the agricultural and trade practices during harappan time.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हड़प्पा सभ्यता (2600 B.C. - 1750 B.C.) का विकास ग्रामीण कृषक बस्ती संस्कृति के नगरीकरण के चरण में प्रवेश करने से हुयी मानी जाती है।

हड़प्पा काल के दौरान कृषि व्यवस्था काफी उन्नत थी। कपास, गेहूँ, चावल आदि उत्पादन किया जाता था। खेतों की जुताई लकड़ी के हल (कालीबंगा में साक्ष्य की प्राप्ति हुयी) के द्वारा की जाती थी। इसी तरह अधिशेष कृषि कर्म की उपस्थिति की वजह से ही शिल्प कार्य को प्रोत्साहन मिला तो लोथल से जुते हुए खेत के साक्ष्य मिलना हड़प्पा सभ्यता में कृषि के विकास को इंगित करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नगरीय सभ्यता होने के चलते हड़प्पा सभ्यता में आंतरिक, बाह्य व्यापार किया जाता था, तथा इसके लिए समुद्री & स्थलीय मार्गों का प्रयोग किया जाता था। इस सन्दर्भ में लोथल से गोदीवाड़ा का मिलना महत्वपूर्ण है तथा व्यापारिक सम्बन्ध मिस्त्र, सीरिया, आदि देशों से थे तो निर्यात की वस्तुओं में हाथी दाँत की सामग्री, कपास, खाद्यान्न आदि तो आयात में लाजवर्द (मणि), आदि सामान प्रमुख है। इस सन्दर्भ में हड़प्पा सभ्यता काफी आधुनिक थी।

निष्कर्षतया हड़प्पा सभ्यता एक उन्नत कृषि & व्यापार प्रणाली से युक्त थी, जिसके अपनी समकालीन (मेसोपोटामिया) सभ्यताओं से अच्छे सम्बन्ध थे।

5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(d) जातीय-पुरातत्त्व अतीत और वर्तमान के बीच की कड़ी को प्रस्तुत करता है। चर्चा कीजिये।

Ethno-Archaeology presents the link between the past and the present. Discuss.

इतिहास लेखन के क्रम में पुरातात्विक साक्ष्यों, सिक्कों, अभिलेखों, साहित्यिक ग्रन्थों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है।

जातीय पुरातत्व के द्वारा हम मानव विकास क्रम को हम अतीत व वर्तमान से अच्छे से जोड़कर उनका अध्ययन कर सकने में सक्षम होंगे। वस्तुतः जातीय पुरातत्व यह निर्धारित करने में मदद करता है कि कैसे पूर्वी भारत में आस्ट्रेलियन जनवासियों अपनी भाषा संस्कृति के साथ पायी जाती है, तो भूमध्य सागरीय प्रजातियाँ मध्य व पश्चिमी भारत में कैसे व कब पहुँची।

जातीय पुरातत्व की परिभाषा दें

इसे पुरातत्व की शाखा के रूप में समझें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार मंगोलायडों का पूर्वोत्तर भारत में होना तथा द्रविड़ प्रजातियों का दक्षिण भारत में होना भारतीय ऐतिहासिक विकासक्रम की विविधता को दर्शाता है।

जातीय-पुरातत्व आधारित अध्ययन के द्वारा भारत के सम्बन्ध में कई धारणाओं का मिथक भी टूटता है जैसे - आर्यों का आगमन कहीं से हुआ या द्रविड़ भारत के स्वदेशी लोग थे।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मानव विकास क्रम के साथ-साथ उससे संलग्न प्रथाओं, विचारों आदि के निर्धारण में जातीय-पुरातत्व आधारित अध्ययन काफी महत्वपूर्ण है।

5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) गुप्तकाल में श्रेणियों और व्यापारिक संघों की स्थिति पर प्रकाश डालिये।

Highlight the status of guilds and trade organizations during the Gupta period.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गुप्तकाल की उपस्थिति भारत के उत्तरी भाग में 200 A.D. से लगभग 5400 A.D. तक मानी जाती है। इस दौरान भारतीय व्यापार & वाणिज्य काफी उन्नत अवस्था में था।

गुप्तकाल के दौरान श्रेणियों & व्यापारिक संघों की उपस्थिति देखी जा सकती है :-

सार्थवाह :- व्यापारियों का मुखिया

श्रेष्ठि = व्यापारिक श्रेणी आदि। इनकी स्थिति को निम्न तरह से समझ सकते हैं :-

a) ये श्रेणियाँ & व्यापारिक संघ सदस्यों को धन उधार देते थे।

b) सदस्यों की शिक्षा का प्रबन्ध करते थे।

c) सदस्यों के न्यायिक झगड़ों को

Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सुलझाते थे।

a) विवाह, उत्सव आदि सामाजिक कार्यों का आयोजन करने में मदद करते थे।

b) राजाओं द्वारा इन्हें भूमिदान भी किया जाता था।

c) श्रेणी & व्यापारिक संघों का अपने सदस्यों पर राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सामाजिक नियंत्रण होता था।

d) ये श्रेणियाँ & व्यापारिक संघ विभिन्न व्यवसायों से जुड़े होते थे जैसे- गुप्तकालीन अभिलेख में मालवा की एक तीर-कमान बनाने वाले संघ का उल्लेख किया गया है।

अतः गुप्तकालीन श्रेणी & संघों की उपस्थिति व्यापार-वाणिज्य में लगभग उसी तरह है जैसी कि आज में अधिक उदारवादी सहकारी व्यवस्था की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

7(a)(i)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) ताम्रपाषाण काल में सामाजिक असमानता की जड़ें पाई गईं। ~~उदाहरण~~ सिद्ध कीजिये। 20

Social inequality found its root in the chalcolithic period. Establish through examples. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

ताम्रपाषाण काल की शुरुआत पाषाण काल के बाद से मानी जाती है जिसमें तांबे के साथ-साथ पाषाण उपकरणों का उपयोग भी होता रहा।

सामाजिक असमानता के तत्वों की व्याख्या

ताम्रपाषाण काल तक मनुष्य कृषि से परिचित हो चुका था तथा पशुपालन द्वारा भी अपनी आजीविका चलाना जानता था। कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य मेहरगढ़ से प्राप्त हुए हैं।

इसी क्रम में ताम्रपाषाण काल में स्थायी आवास की प्रवृत्ति भी मनुष्य में आ चुकी थी। जिसकी पुष्टि बुर्जहोम (कश्मीर) से मिले गर्तवास के साक्ष्यों से भी होती है।

ताम्रपाषाणकाल में मानव शिकारी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

7(a)ii

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जीवन से कृषि & पशुपालन युक्त जीवन की तरफ अग्रसर हो रहा था। वस्तुतः इस दौरान कृषि उत्पादन को रखने हेतु मृदभांडों की उपस्थिति तथा मृदभांडे में विभिन्न प्रकारों का होना समाज में आर्थिक विषमता को इंगित करता है।

इसी प्रकार ताम्रपाषाण-कालीन मानव के समय उपस्थित विभिन्न प्रकार के गर्तवास (गोल, गड्ढे वाले) समाज में असमानता की शुरुआत को संकेतित करते हैं। इसी तरह कृषि भूमि को निजी भूमि की अवधारणा से संयुक्त कर समाज में भविष्य में विभाजन किया गया, जिसके प्रारम्भिक बीज यहाँ दिखायी पड़ते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

7(a)(iii)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसी क्रम में पशुपालन द्वारा उत्पन्न खाद्य पदार्थों के चलते इन पर स्वामित्व की अवधारणा का विकास हुआ। जिससे वैदिक युग में गोप्ता, जैसी अवधारणायें भी सामने आयी। आवास संबंधी साक्ष्यों के आधार पर जब आगे चलकर सिन्धु सभ्यता में कुलीन वर्ग का निवास पश्चिमी भाग में ऊँचाई पर तथा निम्न वर्ग का पूर्वी भाग में कम ऊँचाई पर किया गया तो गर्तवास (गड्ढे में) आदि अवधारणाओं की ताम्र पाषाणिक काल में उपस्थिति इस विभाजन की पूर्ववर्ती मालूम पड़ती है।

निष्कर्ष रूप से यह कहना कठिन है कि सामाजिक विषमता ताम्र पाषाणकाल में थी किन्तु ऐसी परिस्थितियां जरूर बनने लगी थीं जिन्होंने इस विषमता को भविष्य में जन्म दिया।

12/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

7(b) i

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) मगध साम्राज्य की सफलता विभिन्न भू-राजनीतिक विचारों का परिणाम थी। परीक्षण कीजिये। 15

The success of the Magadh Empire was a consequence of a great many geopolitical considerations. Examine. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बौद्ध ग्रंथ 'अगुत्तरनिकाय' में वर्णित सोलह महाजनपदों में से एक मगध का उत्कर्ष बिम्बिसार के शासन में प्रारम्भ होकर अशोक के शासन में चरम पर पहुँचता है।

मगध साम्राज्य की सफलता को निम्न बिंदुओं के तहत समझा जा सकता है:-

i) मगध साम्राज्य की भौगोलिक स्थिति काफी अच्छी थी। वस्तुतः एक तरफ जंगलों से सैन्य उपयोग हेतु हाथियों की आपूर्ति होती थी तो इन्हीं जंगलों को काटकर कृषि योग्य भूमि का विस्तार कर साम्राज्य के आर्थिक संसाधनों में वृद्धि की जाती।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

7(b)(ii)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ii) लोहे की अत्यधिक उपलब्धता ने मगध को अन्य महाजनपदों के सापेक्ष लाभ की स्थिति में पहुँचाया।

iii) मगध की राजधानी की स्थिति अत्यन्त सुरक्षित थी अर्थात यह गंगा एवं सोन नदियों के संगम पर अवस्थित होकर प्राकृतिक सुरक्षा से घिरा था। फलतः आक्रमण का भय नहीं था।

iv) इसी प्रकार मगध साम्राज्य को बिम्बिसार, कालाशोक, नंद, चन्द्रगुप्त मौर्य अशोक जैसे कुशल शासकों का मार्गदर्शन भी मिला।

v) बिम्बिसार द्वारा कूटनीति के द्वारा (विवाह) की मगध का प्रभाव बढ़ाने का प्रयास किया गया। इसी क्रम में उसने कोशल नरेश प्रसेनजित की बहन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

7(b)(iii)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से विवाह किया और दहेज में काशी प्राप्त किया।

vi) मगध के उत्कर्ष में चाणक्य, जैसे रणनीतिकारों का योगदान भी माना जाता है। जिन्होंने चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ मिलकर एक महान मगध साम्राज्य का निर्माण किया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मगध राज्य का उत्कर्ष तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों की मदद से हुआ जिसमें मगध की भू-राजनीतिक स्थिति ने केन्द्रीय भूमिका निभायी।

उत्कर्ष के सभी आयामों को सन्तुलित रूप से लिखा गया है

8/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) अर्थशास्त्र के आलोक में मौर्य प्रशासन की प्रकृति की चर्चा कीजिये। 15

Discuss the nature of the Mauryan administration in light of Arthashastra. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

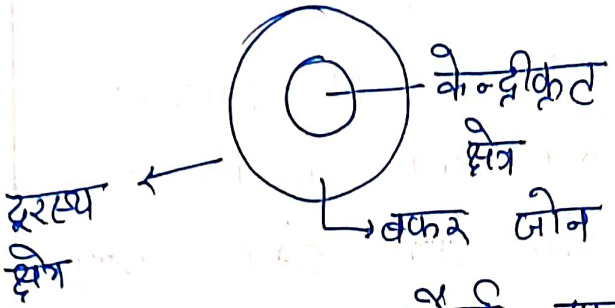

मौर्य साम्राज्य एक अत्यधिक केन्द्रीकृत तथा निरंकुश राजतन्त्रात्मक प्रणाली से युक्त था। जिसमें तीर्थों तथा विभिन्न अध्यक्षों (सीताध्यक्ष, विविताध्यक्ष, शुल्काध्यक्ष) जैसी नौकरशाही के माध्यम से शासन किया जाता था।

अर्थशास्त्र के आलोक में मौर्य प्रशासन की प्रकृति निम्नलिखित है-

i) प्रशासन का सर्वोच्च स्थान राजा का है तथा इसकी मदद के लिए विभिन्न तीर्थों तथा अध्यक्षों की नियुक्ति राजा द्वारा की जाती थी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ii) इन नौकरशाहों की सलाह राजा पर बाध्य नहीं होती थी।

iii) साम्राज्य का विभाजन विभिन्न प्रांतों में किया गया था जिन्हें भुक्ति कहा गया तथा इनके प्रमुख उपरिक कहलाते थे तथा इन पर राजपरिवार से सम्बन्धित व्यक्ति की नियुक्ति की जाती थी।

iv) प्रांतों का विभाजन विषय में तथा विषयों का विभाजन ग्रामों में किया जाता था।

v) स्थानीय स्तर पर 'एग्रोनोमाई' जैसे सड़क निर्माण अधिकारी की उपस्थिति तो युक्त - रज्जुक - प्रादेशिक जैसे न्यायिक अधिकारियों की उपस्थिति भी होती है।

vi) प्रशासन की आय का मुख्य स्रोत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भू-राजस्व था। जिसकी सामान्य दर उपज का छठा हिस्सा होती थी।

vii) कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में गुप्तचरों का भी उल्लेख किया है जिन्हें 'गूढ़-पुरुष' कहा जाता था। जो साम्राज्य संबंधी सभी सूचनायें शासक तक पहुँचाते थे।

viii) साम्राज्य के केन्द्रीकृत स्वरूप के चलते केन्द्रीय क्षेत्र व प्रांतीय क्षेत्र में शासक का प्रत्यक्ष नियंत्रण होता था तथा दूरस्थ बाह्य क्षेत्र में यातायात के साधनों का अभाव तथा अन्य व्यवहारिक समस्याओं के चलते अप्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित किया जाता था।

उपर्युक्त बिंदुओं से मौर्य साम्राज्य के केंद्रीकृत, निरंकुश किन्तु कल्याणकारी राज्य की संकल्पना की पुष्टि होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (a) मौर्य-पूर्व काल में गणराज्यों के पतन के कारणों का विवरण दीजिये। 20

Account for the reasons of decline of republics during the pre-mauryan Period.20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मौर्य-पूर्व काल को मुख्यतया: महाजनपदकाल के नाम से जाना जाता है। जहाँ सोलह महाजनपदों की उपस्थिति थी। जिसमें मल्ल, वज्जि आदि का शासन गणराज्यों की तरह होता था।

6वीं सदी के गणराज्य की चर्चा करें।

वस्तुतः महाजनपदकालीन गणराज्य से तात्पर्य यह था कि शासन का प्रमुख राजा ही होगा, किन्तु उसकी नियुक्ति की अनुमति एक सभा द्वारा की जायेगी तथा शासन सम्बन्धी आवश्यकताओं में यह समूह महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता था।

इन गणराज्यों के पतन को निम्नलिखित कारणों से समझ सकते हैं:

i) महाजनपद काल में हुयी लोहे के इस्तेमाल की खोज ने तत्कालीन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजनीतिक, सामरिक स्थितियों को बदल दिया। फलस्वरूप विभिन्न युद्ध लड़े गये और मगध जैसे शक्तिशाली महाजनपद एक साम्राज्य के तौर पर उभरकर सामने आये।

ii) गणराज्यों के शासन प्रमुखों की तुलना में अन्य महाजनपदों के प्रमुख अधिक शक्तिशाली, साधन सम्पन्न तथा कुशल शासक थे। फलस्वरूप काशी, मगध, कोसल आदि ने अपना दायरा इन गणराज्यों को पराजित कर बढ़ाया।

iii) भू-क्षेत्रीय अवस्थिति गणराज्यों की अपेक्षा अन्य क्षेत्रों की अच्छी थी। जिससे लोहे के प्रयोग से कृषि क्षेत्रों का विस्तार हुआ तो सैन्य प्रयोग हेतु हाथियों की उपलब्धता सुनिश्चित हुयी। इसमें जो महाजनपद पिछड़ गये उनका पतन हो गया फिर चाहे वह गणतंत्र

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हो या राजतंत्र।

iv) मगध जैसे साम्राज्यों के उत्कर्ष ने भी गणराज्यों के पतन में भूमिका निभायी। वस्तुतः कालाशोक, उदायिन, नंद जैसे शासकों ने मगध को एक महाजनपद से साम्राज्य में बदल दिया। इस प्रक्रिया में साथ-साथ अन्य महाजनपदों का विनाश हुआ।

v) गणराज्यों की उपस्थिति तत्कालीन समय में भारतीय राजनीतिक विखराव की स्थिति को दर्शाता है। इस सन्दर्भ में पश्चिमी सीमा पर अवस्थित कई राज्यों का पतन विदेशी आक्रमण (सिकन्दर, ईरानी आदि) से भी हुआ।

निष्कर्षतया यह कहना उचित होगा कि महाजनपदों का पतन एक बिखरी राजनीतिक शक्ति के पतन की शुरुआत तो एक सक्षम मौर्य शक्ति के आगमन की तैयारी थी।

पतन के कारण
राजनीतिक के अलावा
कारण/संक्षिप्त प्रभाव का उल्लेख

11/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) मौर्य साम्राज्य के पतन हेतु कई शक्तियों ने मिलकर काम किया। स्पष्ट कीजिये। 15

Many forces acted together to cause the decline of the Maurya empire. Elaborate. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मौर्य साम्राज्य की स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य ने तत्कालीन नंद वंश को पराजित कर की थी जिसमें बिंदुसार तथा अशोक ने इस साम्राज्य को चरम पर पहुँचाया।

मौर्य साम्राज्य का चरम अशोक ने कलिंग जीत से निर्धारित किया था और इस समय मौर्य साम्राज्य में सम्पूर्ण पश्चिमोत्तर भारत, पूर्वी भारत, तथा पांड्य, चेर साम्राज्य को छोड़कर दक्षिण भारत (वर्तमान कर्नाटक) तक फैला था।

मौर्य साम्राज्य का पतन अशोक की मृत्यु के 50 वर्षों के भीतर ही हो जाता है। जिसके लिए निम्नलिखित कारण जिम्मेदार थे:-

i) कुछ विद्वानों का मानना है कि मौर्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काल में अशोक ने बौद्ध धर्म पर अतिशय बल दिया, फलस्वरूप ब्राह्मण नाराज हुए और अन्ततः एक ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने अंतिम मौर्य की हत्या कर शुंग वंश की स्थापना की।

ii) इसी तरह मौर्य साम्राज्य के पतन में अयोग्य उत्तराधिकारियों की भूमिका को भी देखा जा सकता है वस्तुतः मौर्य साम्राज्य एक केन्द्रीकृत साम्राज्य था जिसके लिए योग्य, कुशल, दूरदर्शी शासक की आवश्यकता थी। जो कि बाद के मौर्य शासक नहीं थे।

iii) इसी प्रकार धर्म पर अत्यधिक बल देने से राजकोष पर अत्यधिक दबाव पड़ा और परवर्ती मौर्य शासकों की अकुशल नीतियों के चलते राजस्व के अन्य स्रोतों की खोज नहीं हुयी और साम्राज्य की पकड़ कमजोर हुयी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

iv) अशोक द्वारा बौद्ध धर्म अपनाने के बाद हिंसा त्याग दी गयी, किन्तु अशोक ने शक्ति के साथ इसका संतुलन बनाये रखा और साम्राज्य जीवित रहा। वस्तुतः बाद के शासकों में इससे प्रकर्मण्यता की नीति विकसित हुयी और सेना में भी सैन्य कला कौशल की कमी आयी।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मौर्य साम्राज्य रूपी बरगद के गिरने में केवल ब्राह्मणों की प्रतिक्रिया नहीं थी अपितु अन्य बहुत सारी तलवारों का योगदान था।

6/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) अशोक के धम्म ने मौर्य साम्राज्य की स्थिरता को व्यापक रूप से प्रभावित किया। परीक्षण कीजिये। 15

Ashokan Dhamma significantly influenced the stability of the Mauryan empire. Examine. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

"अपासिनव बहुकयानि दया दाने सचे सोचये मादवे साधुता च"

उपर्युक्त पंक्तियाँ अशोक के धम्म से संबंधित है। जिसका मतलब है कि मृदुभाषी बनो, सत्य बोलो, विचारों की पवित्रता बनाये रखो, बड़ो का सम्मान करो, आदि।

धम्म को परिभाषित करें।

अशोक ने कलिंग विजय के बाद समाज में धम्म की अवधारणा को लागू किया। जिसे निम्न बिंदुओं के तहत परीक्षित किया जा सकता है:-

i) धम्म की अवधारणा से अशोक को तलवार की बजाय शांति से साम्राज्य पर पकड़ बनाने में मदद मिली

ii) धम्म एक नैतिक आचार संहिता था,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जिसके पालन हेतु धम्म महामात्रों की नियुक्ति की गयी। फलस्वरूप समाज में बन्धुता, भाईचारा आदि सद्गुणों का विकास हुआ तथा विभिन्न विद्रोहों की संख्या में कमी आयी।

iii) धम्म के आदर्शों के पालन की मिसाल अशोक ने खुद प्रस्तुत की और प्रजा को अपनी संतान बताकर देवनामप्रिय की उपाधि भी ली। फलस्वरूप लोगों में अशोक के प्रति विश्वास बढ़ा।

iv) इसी प्रकार धम्म के आदर्शों के तहत अशोक ने सरायों का निर्माण कराया, अस्पताल बनवाये, कुएँ खुदवाये आदि सार्वजनिक कार्यों को किया, जिससे प्रजा में अशोक की पिता संबंधी छवि मजबूत हुयी और साम्राज्य की स्थिरता को बढ़ावा मिला।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

v) इसी प्रकार धम्म के जरिये अशोक ने समाज में शांति व अहिंसा की नीति का प्रसार किया, फलस्वरूप व्यापार-वाणिज्य, कृषि कर्म आदि में प्रगति हुयी और राजकोष समृद्ध हुआ। फलतः साम्राज्य की स्थिरता में सुधार हुआ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि धम्म ने मौर्य साम्राज्य की स्थिरता में अमूल्य योगदान दिया किन्तु परवर्ती शासकों ने इसके महत्व को ठीक से नहीं समझा और इस वजह से विघटनकारी तत्वों का भी समावेश हुआ।

प्रश्न के प्रमाणों (कालावधि) कृषि भी दें।

7/15

Feedback

Questions ....

Model Answer & Answer Structure ....

Evaluation ....

Staff ....

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation